

Report
Geographical Survey
of Nawalgarh

**IN PARTIAL FULFILMENT OF THE REQUIREMENT FOR THE AWARD OF MASTERS
DEGREE IN GEOGRAPHY**



DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

SETH G.B. PODAR COLLEGE

NAWALGARH (RAJASTHAN)



PANDIT DEENDAYAL UPADHYAYA SHEKHAWATI UNIVERSITY, SIKAR

SUBMITTED BY

MONIKA SAINI

M.A./M.Sc. PREVIOUS

SESSION: 2021-22



**DEPARTMENT OF GEOGRAPHY
SETH G.B. PODAR COLLEGE, NAWALGARH**

**CERTIFICATE OF COMPLETION
GEOGRAPHICAL SURVEY**

**In Partial Fulfillment of The Requirement For The Award of
Masters Degree In Geography (M.A/M.Sc.)**

Presented To

Monika Saini

**For Completing Geographical Survey of
Nawalgarh**

**Prof. Shantilal Joshi
Head of Department**

**Dr. Satyendra Singh
Principal**





सेठ ज्ञानीराम बंशीधर पोदार महाविद्यालय नवलगढ़

सत्र 2021-22



पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय सीकर

भौगोलिक क्षेत्रीय अध्ययन रिपोर्ट



निर्देशक

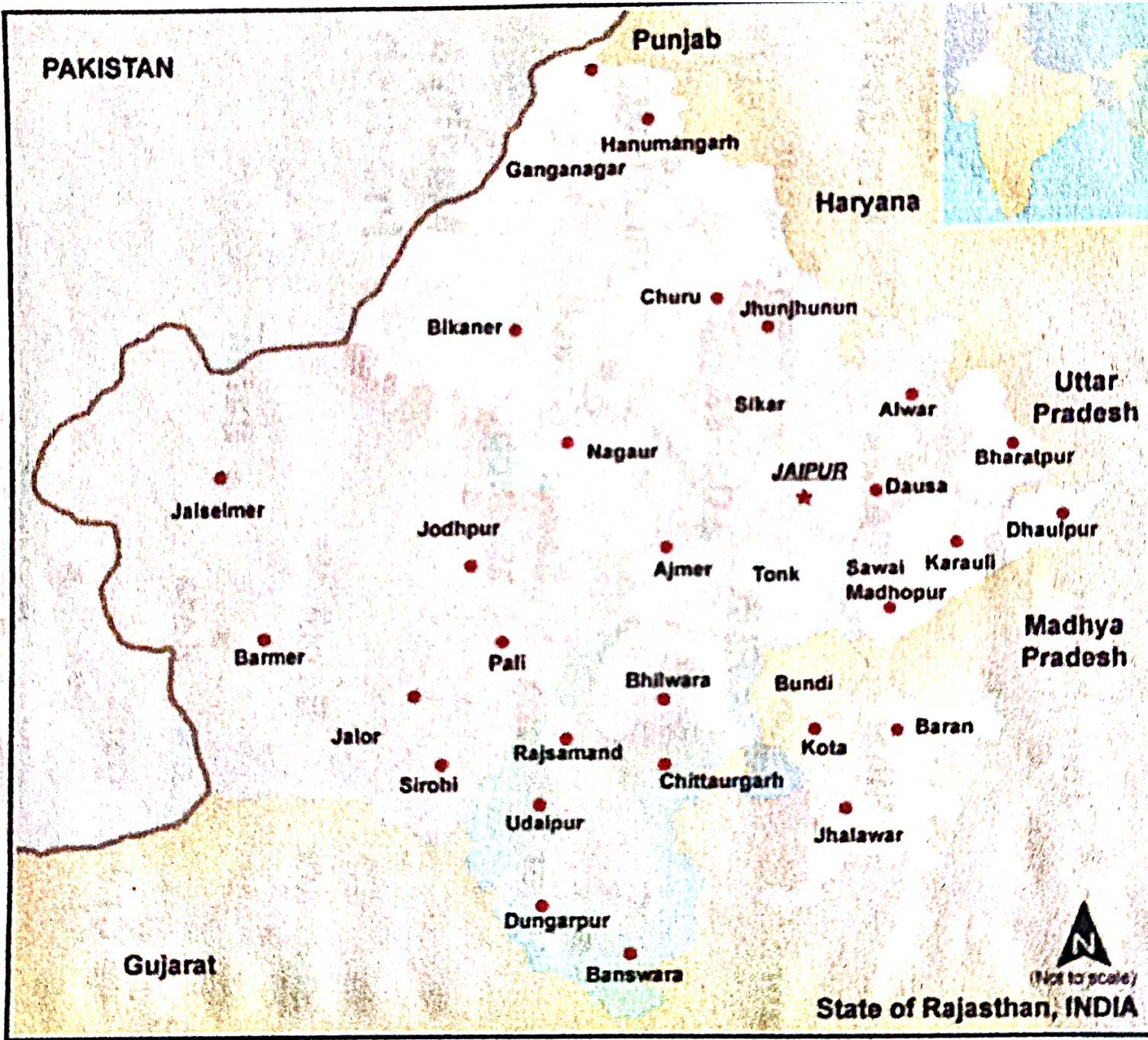
सर्वेक्षणकर्ता

सुनिल कुमार

नाम— मोनिका सैनी

भूगोल विभागाध्यक्ष

एम.ए./एम.एस.सी. प्रिवियस(भूगोल)

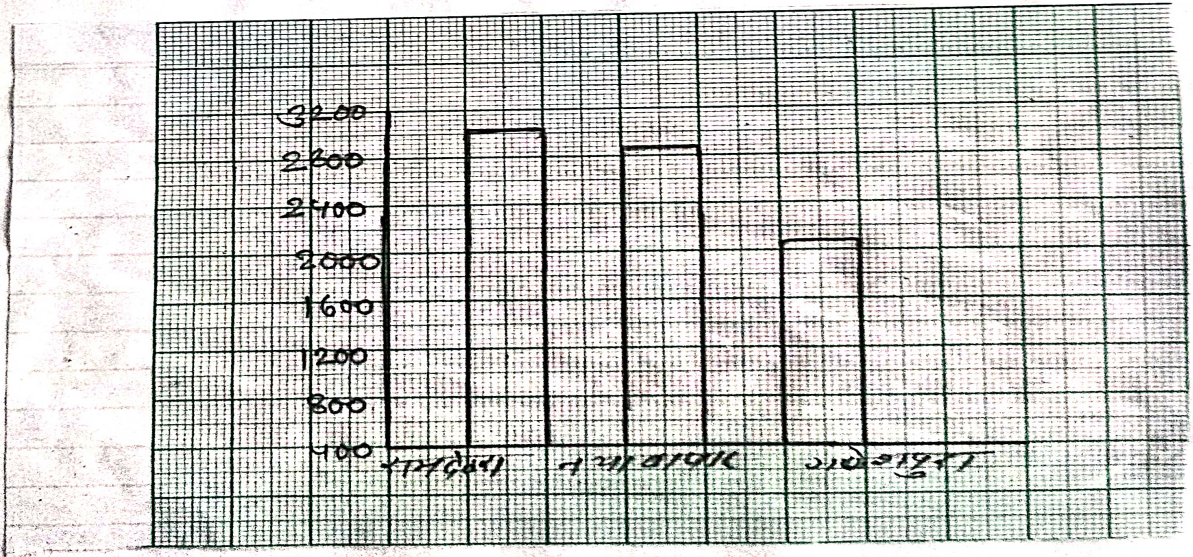


जनसंख्या:-

नवलगढ़ शहर में संघन जनसंख्या का जमाव पाया जाता है आबादी क्षेत्र में जनसंख्या वितरण अधिक तथा बाहरी भागों में (खेतों में) जनसंख्या का वितरण कम है यहां कि कुल जनसंख्या 36454 है जिनमें से एस.सी के लोग 2875 एस.टी के 2082 तथा अन्य लोगों की संख्या 2960 है। इस गाँव में पाई जाने वाली जनसंख्या का वितरण निम्न तालिक में दिया जा रहा है:-

तालिका संख्या 3

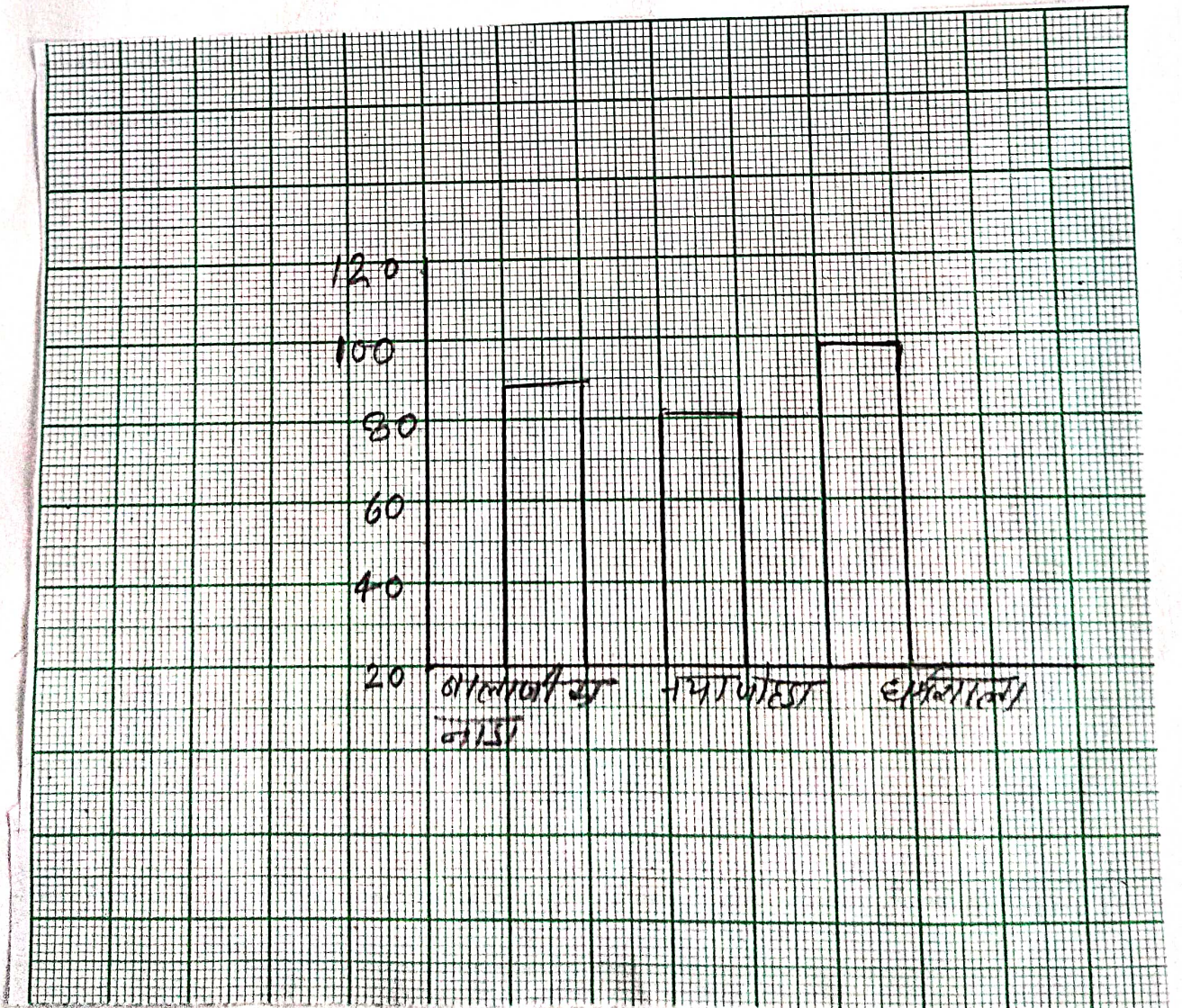
क्र सं.	गाँव का नाम	S.C	S.T	अन्य लोग	कुल जनसंख्या
1	रामदेवरा	1050	720	1200	2970
2	नया बाजार	970	852	1020	2842
3	गणेशपुरा	855	510	740	2105
	योग	2875	2082	2960	36454



तालिका संख्या-2

क्र.सं.	गांव	कुएँ	नलकुप	हैण्डपम्प	कुलयोग
1	बालाजी का नाडा	72	14	3	89
2	नया जोहड़ा	61	17	6	83
3	धर्मशाला	68	23	4	95
	कुल	201	54	13	267

उपरोक्त आंकड़ों की सहायता से मिश्रित रेखाचित्र द्वारा इनका निरूपण किया जा सकता है:-



परिचय:—

नवलगढ़ शहर की स्थापना ठाकुर नवल सिंह बहादुर ने 1737 ई. में की थी। मारवाड़ी समुदाय के कई महान व्यापारिक परिवार बेरी मूल के हैं। इनकी पर्यटन एवं सांस्कृतिक कार्यों में बड़ी रुची थी तथा इनके चार पुत्र सात रानियाँ थी नवलगढ़ से झुंझुनू मार्ग पर 8 किलोमीटर दूर उत्तर में स्थित है। आज बेरी की दशा व आकृति में निरन्तर परिवर्तन देखने को मिल रहा है। सामाजिक राजनीतिक व आर्थिक दृष्टि से उभर रहा है। जो शेखावाटी में अपना नाम कमा पा रहा है। धीरे-धीरे बेरी के समीप होने से इसके विकसीत होने पर बल मिल रहा है। नवलगढ़ शहर में जनसंख्या का निरन्तर विस्तार हो रहा है क्योंकि यहां सांस्कृतिक धरोहर पायी जाती है। जो पर्यटन में बढ़ोतरी हो रही है। जो आर्थिक बढ़ोतरी का स्वस्थ बना रहा है।

नवलगढ़ के पूर्व में बलरिया गांव तथा पश्चिम में बीदसर, कल्याणपुर तथा उत्तर पश्चिम में मिर्जवास और दक्षिण में सीकर स्थित है। डुण्डलोद गांव नवलगढ़ तहसील की प्रमुख ग्राम पंचायत हैं। नवलगढ़ गांव राजस्थान का पहला गांव था, जो इंटरनेट की सेवाओं से जुड़ा था तथा सर्वप्रथम झुंझुनू जिले के इसी गांव में यूको बैंक की स्थापना हुयी थी इस गांव में भारत का प्रसिद्ध मारवाड़ी घोड़े या मालानी नस्ल के घोड़ों का प्रजनन केन्द्र स्थित है। तथा यहां पर राजस्थान का गदर्भ केन्द्र स्थित है।



प्रमुख तीर्थ व पर्यटन स्थल:-

नवलगढ़ शहर पर्यटन की दृष्टि से शेखावाटी में महत्वपूर्ण स्थान रखता है इस गांव में पर्यटन एवं ऐतिहासीक स्मारकों की दृष्टि से विभिन्न हवेलियों तथा नवलगढ़ शहर को देखने के लिए विदेशों से बड़ी संख्या में पर्यटक आते रहते हैं नवलगढ़ शहर का गढ़ मुख्य आकर्षण का केन्द्र है जिनके चारों ओर नहर बनी हुई है तथा यह लगभग 8 हैक्टर में फैला हुआ है इस गढ़ में विशेष तौर से दिवान खास, सूर्य घड़ी तथा दु-छता महत्वपूर्ण है।

दिवाना खास में राजा तथा रानीयां निवास करती थी, तथा दु-छता में अनेक भित्ति चित्र तथा रानीयों के सजावट की सामग्री एकत्र है। सूर्य घड़ी अब भी सामान्य घड़ियों की भांती समय का सही निर्धारण कर पाती है। इस गढ़ में कई फिल्में तथा सीरीयल बनाये गये है। राजा का बाजा, बिनणी वोट देनी वाली तथा विदाई इत्यादि फिल्मों की शूटिंग की जा सकी है तथा बकरा सीरीयल भी यही से फिल्माया गया है।

खनिज सम्पदा:-

वर्तमान समय में नवलगढ़ शहर में किसी प्रकार के खनिज का विशेष तौर पर खनन नहीं किया जा रहा है। नई खोजों तथा शोधकार्यों के आधार पर इस क्षेत्र में खनिज उपलब्ध होने की सम्भावना है।

गोयनका हवेली का म्यूजियम प्राचिन परम्पराओं तथा वेशभूषा एवं अन्य कार्यों के लिए विचित्र शैली में बना हुआ है यहां श्याम मंदिर, ठाकुर जी का मंदिर, संतोषि माता का मंदिर, हनुमान जी का मंदिर तथा पोलो ग्राउण्ड इत्यादि महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल तथा धार्मिक तीर्थ स्थल है। इन सामारिक स्थलों का भ्रमण करने के लिए हजारों विदेशी सैलानी आते रहते हैं।

अधिवास:-

नवलगढ़ गाँव में अधिवासों का प्रमिरूप चौक पट्टीनुमा है। इसके साथ-साथ कुछ घर तीरनुमा प्रतिरूप का मिक्षित प्रतिरूप में भी बसे हुए हैं। नवलगढ़ बस स्टैण्ड से डुण्डलोद गढ़ तक सीधा मार्ग है तथा इस मार्ग के दोनों किनारों पर घर बने हुए हैं तथा मस्जिद, डुण्डलोद गढ़, हवेलियों तथा ग्राम पंचायत के चारों ओर वृताकार रूप में घर बने हुए हैं अधिकांश घर सीमेन्ट कंकरिट तथा लोहे के मिश्रण से निर्मित पक्के अधिवास हैं परन्तु कुछ संख्या में गरिबी रेखा से निचे जीवने यापन करने वाले लोगों की संख्या 115 है जिनके घर कच्ची ईंटों से निर्मित है इस गांव में 1 मंजिल से लेकर बहू मंजिल तक इमारते बनी हुई है। यहां की हवेलियां, गढ़, छतरियां तथा मन्दिर पुरानी तकनीकों विधियों पर आधारित है जिनकी चित्र शैली ओर विधि शैली अद्भूत है जलवायू का घरों की बनावट तथा प्रका में विशेष ध्यान रखा गया है। गांव में 20 प्रतिशत पक्के मकान 15 प्रतिशत अर्द्ध पक्के मकान तथा 5 प्रतिशत कच्चे अधिवास निर्मित है। तथा डुण्डलोद गांव में कोई भी अधिवास योग्य नहीं स्वीकृत हुआ है यह स्थिति वर्ष 2015-16 में फरवरी माह तक की है।



परिवहन के साधन:-

किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास में परिवहन के साधनों का बहुत बड़ा योगदान है इनके द्वारा आवश्यक माल को मांगने, अतिरिक्त उत्पादन को बाहर भेजने एवं अपने क्षेत्र में नवाचारों के आने का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित होता है। चूंकि बेरी गांव सड़क व रेल परिवहन से जुड़ा हुआ है।

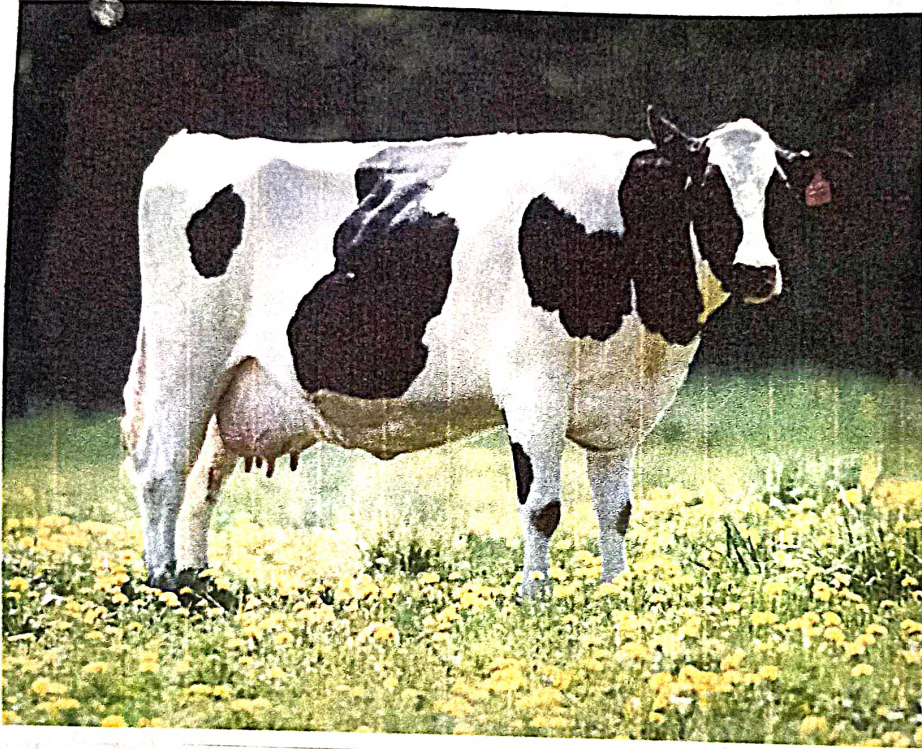
जयपुर-लोहारू राज्य राजमार्ग गांव की सीमा को दक्षीण से उत्तर दिशा की ओर स्पर्श करता हुआ गुजरात है जो गांव को अन्य नगरों, कस्बों, जिला मुख्यालयों तथा राजधानी से जोड़ता है। गांव के अन्दर 4 किलोमीटर पक्की सड़क(डामर युक्त) 3 किलोमीटर सीमेंट सड़क तथा 10 किलोमीटर कच्ची सड़क(ग्रेवल रोड़) है जो गांव की गलियों को गांव के चौक से तथा चौक कसे अन्य पड़ोसी गांवों नगरों, जिलों तथा राजधानियों से जोड़ने का कार्य करती है।

यातायात के साधनों में यहां बस, ट्रक, जीप, कार, मोटर साईकिल, साईकिल, ऊंटगाड़ी(लगभग 45), बेलगाड़ी(लगभग 13), गधागाड़ी(लगभग 20) तथा घोड़ा गाड़ी(लगभग 5) आदि नये व पुराने तथा तिव्र व मंदगती वाले यातायात के साधन विकसित है।



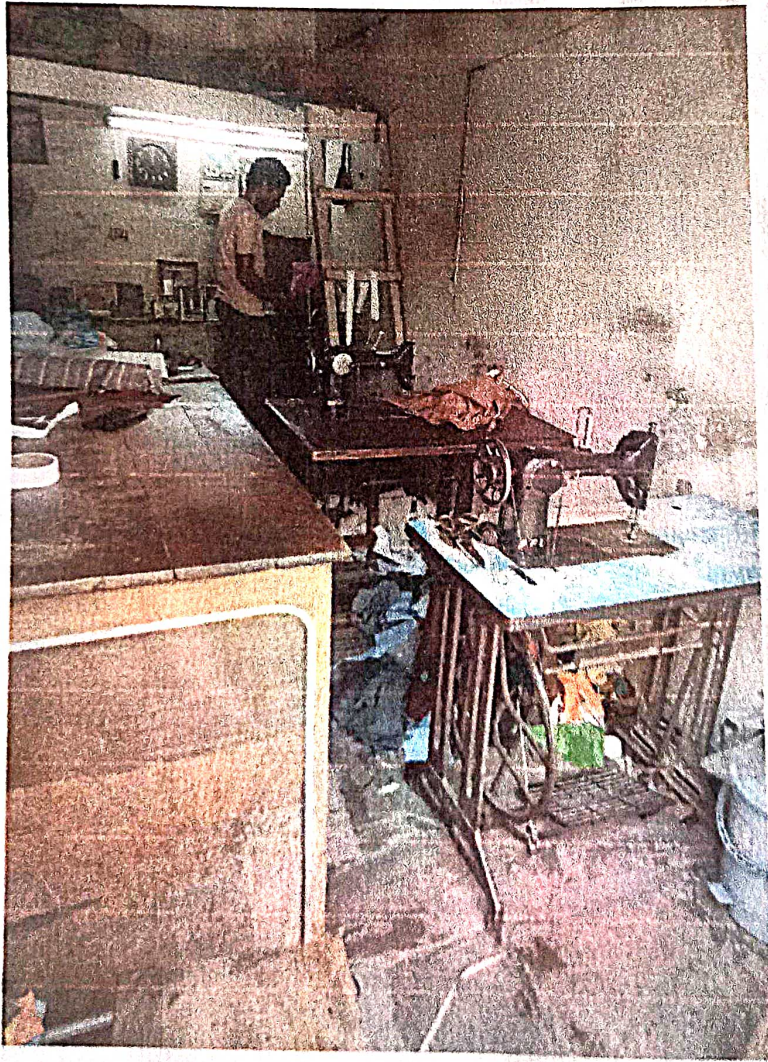
पशु सम्पदा:-

नवलगढ़ शहर पशु सम्पदा की दृष्टि से शेखावाटी में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है यहां पर उत्तम नस्ल की गायें, भेड़, बकरी, ऊट, गधे पाये जाते हैं। डूणुलोद गांव का अश्व प्रजनन केन्द्र तथा कामधेनू गौशाला अपना विचित्र स्थान लिये हुए है कामधेनु गौशाला की स्थापना वर्ष 2008-09 में बुद्धगिरी ट्रस्ट फतेहपुर द्वारा किया जाता है। यह गौशाला 40 बिघा क्षेत्र में फैली हुई है। इस गौशाला में एक ट्यूबवेल व नलकूप बना हुआ है जो गायों को पानी तथा चारा



उधोग धन्धे:-

नवलगढ़ शहर के वार्ड नम्बर 3 में सर्वेक्षण के आधार पर कोई भी बड़ा उधोग धन्धा नहीं था। यह मुस्लिम मोहल्ला होने के कारण छोटी-छोटी चुड़ियों की दुकाने तथा चुड़ियों का कार्य घरों में किया जाता है इन चुड़ियों की कीमत 100 से 5000 रूपये तक है चुड़ियों लाख द्वारा निर्मित होती है तथा इन पर विभिन्न प्रकार की डिजाइन तथा तरासकर आधुनिक रूप दे दिया जाता है जो सुन्दरता की दृष्टि से अच्छी लगती है इसके साथ-साथ इस क्षेत्र में दवाईयों की दुकानें स्थित है। गाँव में एक ऑयल मिल भी स्थित है वह भी वर्तमान समय में बंद की स्थिति में है।



स्वास्थ्य सुविधाएं:-

नवलगढ़ शहर में सरकारी तथा गैर सरकारी स्तर पर कई स्वास्थ्य केन्द्र बने हुए हैं। सरकारी हॉस्पिटल में प्रतिदिन लगभग 70 मरीजों का इलाज डॉ. भास्कर बी. रावल द्वारा किया जाता है जबकि प्राथमिक उपस्वास्थ्य केन्द्र में डॉ. निर्मला देवी द्वारा लगभग 50 मरीजों का इलाज व दवाई वितरित की जाती है। यहां पर टीकाकरण की भी व्यवस्था है। नवलगढ़ शहर में एक प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्र, एक गोयनका निजी स्वास्थ्य केन्द्र स्थित है जहां पर प्रतिदिन मौसमी बिमारियों का इलाज के लिए आस-पास के लोग आते रहते हैं इनके द्वारा टि.बी. टाइफाइड व फेफड़ों से सम्बन्धित रोगों का निदान किया जाता है। पशुओं के लिए भी एक पशु चिकित्सा केन्द्र स्थापित है गाय, भैंस, ऊंट, बकरी, भेड़ का इलाज इस प्रकार किया जाता है। इस केन्द्र में टीकाकरण कृत्रिम गर्भादान तथा मौसमी बिमारियों की रोकथाम हेतु इलाज किया जाता है। गांव में स्वास्थ्य सुविधाओं की पर्याप्त सुविधाएं हैं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की संख्या 1 तथा उपस्वास्थ्य केन्द्र की संख्या 1 एवं होमियोपैथिक चिकित्सालय की संख्या 1 है और इसी प्रकार पशु चिकित्सालय 1 है।



शिक्षा का स्तर:-

नवलगढ़ शहर में शिक्षा की दृष्टि से अच्छा वातावरण बना हुआ है प्राचिन कालन से ही यहां पर शैक्षणिक दृष्टि से राजकीय सीनीयर सैकण्डरी स्कूल संचालित थी। इसका निर्माण नवलगढ़ शहर के प्रसिद्ध सेठ रामचन्द्र राजकीय द्वारा करवाया गया था वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप बदल गया है यहां सी.बी. एस.सी से मान्यता प्राप्त 4 स्कूलों तथा दो डिग्री कॉलेज एक पोलॉटेकनिकल कॉलेज, 9 मीडिल स्कूलों, दो आई.टी.आई कॉलेज. 2 बी.एड कॉलेज. 12 प्राईमरी स्कूल निजी क्षेत्र तथा सरकार द्वारा संचालित है इसके अतिरिक्त शेखावाटी क्षेत्र की प्रमुख इंजिनियरिंग कॉलेज भी शामिल है यह क्षेत्र डिग्री, शिक्षा तथा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने के साथ-साथ तकनीकी शिक्षा में भी अग्रणी बना हुआ है इसी कारण क्षेत्र में आस-पास लोग आकर अध्ययन करते है तथा अध्ययनरत विधार्थियों के लिए उत्तम गुणों के छात्रावासों की व्यवस्था बनी हुई है।



प्राकृतिक वनस्पति:—

अध्ययन क्षेत्र में प्राकृतिक वनस्पति का विवरण बहुत ही कम है तथा वनस्पति की सघनता कम होने के साथ-साथ यहां पर ऊष्ण कटिबंधीय गुण वाली वनस्पति पाई जाती है। चूंकि नवलगढ़ अर्द्ध शुष्क जलवायू के अन्तर्गत स्थित होने के कारण इस क्षेत्र में अर्द्ध शुष्क या अर्द्ध मरुस्थलीय वनस्पति पाई जाती है प्राकृतिक वनस्पति के विकास में जलवायू तथा मृदा का महत्वपूर्ण योगदान होता है इस क्षेत्र के अन्तर्गत खेजड़ी बबूल कंटिली झाड़ियां नीम, सीसम, बरगद, शहतूत, नींबू, पपीता, अमरूद, इत्यादि फलों वाले पौधे भी उपलब्ध हैं। वर्तमान समय में यहां पर बागवानी पौधों के विकास पर ध्यान दिया जा रहा है परिणामतः घरों तथा खेतों में बड़े पैमाने पर फलदार पौधे विकसित हो रहे हैं। यहां पतझड़ वृक्ष भी उपलब्ध हैं जो ग्रीष्म ऋतु आने से पूर्व ही अपने पत्ते गिरा देते हैं चूंकि अध्ययन क्षेत्र में चारागाह का कोई क्षेत्र चिन्हित नहीं किया गया है।



कृषि:-

अध्ययन क्षेत्र में प्रमुख रूप से रबी खरीफ की फसलें उत्पन्न की जाती हैं तथा गांव के आसपास छोटे पैमाने पर जायदा की फसलें भी विकसित की जा रही हैं। रबी की फसल के अन्तर्गत गेहूँ, जौ, सरसों, मैथी, तारामीरा तथा खरीफ की फसल के अन्तर्गत बाजरा, चोला, मुंग व गवार एवं ज्वार तथा जायदा की फसल के अन्तर्गत तरबूज, खरबूजा, ककड़ी, टिन्डा, भिन्डी इत्यादि विकसित किये जाते हैं वर्तमान समय में इन फसलों के उत्पादन बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीकी तथा पद्धतियों पर आधारित फसलें उगायी जाती हैं रबी की फसल अक्टुबर नवम्बर में बोई जाती है तथा सिंचाई का कार्य कुएँ, नलकुप के द्वारा किया जाता है। खरीफ की फसल जुलाई, अगस्त में बोई जाती है तथा अक्टुबर में काट ली जाती है इस की फसल की पैदावार वर्षा पर निर्भर है परन्तु वर्षा समय पर ना होने पर तथा वर्षा जाति है जायदा की फसल को पानी की आपूर्ति सिंचाई के साधनों द्वारा की जाती है जायदा की फसल की बुआई रबी की फसल के पश्चात की जाती है ये फसल पूर्णतः सिंचाई पर आधारित होने के कारण छोटे पैमाने पर विकसित की जाती है। उपयोग तथा अन्य रसायनों का उपयोग किया जा रहा है। बढ़ती हुई आबादी के दबाव से मृदा अनुपजाऊ खारीकरण तथा कई अन्य समस्याओं से ग्रसित होती जा रही है इस समस्या के समाधान के लिए ग्राम पंचायत स्तर पर मिट्टी की बार-बार जांच व परिक्षण करवाया जाता है कृषकों को मिट्टी की उर्वरता बनायी रखने के लिए नई-नई तकनीकी व पद्धतियों से अवगत कराया जाता है।



संचार व मनोरंजन साधन:-

किसी क्षेत्र के विकास का परिचायक संचार एवं मनोरंजन के साधनों पर निर्भर करता है। चूंकि नवलगढ़ शहर में 6 मोबाइल टावर जो विभिन्न कंपनियों से संबंधित है एक पोस्ट ऑफिस तथा 85 प्रतिशत लोगों के घरों में टेलिविजन गति के संचार के साधनों में मोबाइल सुविधा उपलब्ध है गाँव के मध्य में मुख्य पोस्ट ऑफिस स्थित है जिसके अन्तर्गत रजिस्ट्री, स्पीड पोस्ट, सी. टी.सी. तथा मनीआर्डर की सुविधा उपलब्ध है।



1. गांव में बढ़ती हुई जनसंख्या तथा प्रदूषण के अन्य कारको गांव का प्राकृतिक सौन्दर्य व वातावरण पर विपरित प्रभाव पड़ने है।
2. गांव में चारागाहों के अभाव के कारण मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ रही है।
3. वनों के अत्यधिक दोहन के कारण अध्ययन क्षेत्र की जलवायु तथा पशुओं के लिए चारागाहों पर प्रतिकूल प्रभाव दृष्टिगत हो रहा है।
4. अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि के कारण गांव में गरीबी का स्तर बढ़ने लगा है बी. पी.एल तथा ए.पी.एल परिवारों की संख्या में वृद्धि होने लगी है। गांव में शराब की दुकाने, तम्बाकू व गुटखों की दुकाने जगह-जगह पर बनी हुई है। जिससे ग्रामवासियों को धूम्रपान की आदत पड़ गयी है।
5. गांव में नालियों की सफाई समय-समय पर नहीं होने के कारण गन्दगी फैलती रहती है जिसके कारण मौसमी बिमारियों का प्रकोप बना रहता है।
6. बेरी गांव में पर्यटकों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है जिसके कारण ग्रामवासी देशी विदेशी संस्कृति को अपनाते लगे है। फलतः भारतीय संस्कृति एवं परम्परा अपना अस्तित्व खो रही है।